एक पंथ दो काज

डॉ. जसविंदर कौर बिंद्रा

एक पंथ दो काज

डॉ. जसविंदर कौर बिंद्रा

(Estd : 1939)
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001:2000 प्रकाशक

प्रकाशक • प्रभात प्रकाशन™
4/19 आसफ अली रोड
नई दिल्ली-110002
तत्त्वावधान • भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • प्रथम, 2008
मूल्य • पच्चीस रुपए
मुद्रक • नरुला प्रिंटर्स, दिल्ली

EK PANTH DO KAAJ *by* Dr. Jasvinder Kaur Bindra Rs. 25.00
Published by Prabhat Prakashan, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2 (INDIA)
ISBN 978-81-7315-619-9

एक पंथ दो काज

नीता एक अध्यापिका है।
वह शहर के स्कूल में पढ़ाती है।
आज उसे घर जाने की बहुत जल्दी है।
वह बार-बार अपने हाथ पर बँधी घड़ी की ओर देख रही है।
आज उसने अपनी कक्षा में पाठ जल्दी खत्म कर दिया।
उसने विद्यार्थियों को हिदायत दी, सब अपना-अपना सबक याद करें।
वह छुट्टी की घंटी बजने का इंतजार करने लगी।
बच्चे इधर-उधर देखने लगे।
कुछ बच्चे अपनी किताबें समेटने लगे।
मोहन अपनी पेंसिल वापिस लेने रवि के पास गया।
मोहन को पेंसिल काफी छोटी लगी।
रवि ने पेंसिल को घिस दिया था।
दोनों में तकरार होने लगी।
शोर सुनकर नीता ने दोनों को डाँटा, फिर पूछा—
"क्यों शोर मचा रहे हो?"
"मिस, रवि ने मेरी पेंसिल कितनी छोटी कर दी।"

मोहन ने शिकायत की।

''मिस, पेंसिल एकदम कच्ची थी। सिक्का बार-बार टूट रहा था। इसलिए ब्लेड से पेंसिल बार-बार बनानी पड़ी।'' रवि ने सफाई दी।

''कोई बात नहीं। देखो मोहन।'' नीता ने उन्हें समझाया, ''तुमने अपने मित्र की मदद की है।''

''यह बहुत अच्छी बात है। परंतु तुम अपने मित्र से झगड़ा न करो। उसकी बात तो सुनो।''

मोहन और रवि दोनों का ध्यान अध्यापिका की ओर था। अध्यापिका ने आगे कहा, ''हो सकता है, पेंसिल सच में टूट रही हो, रवि ठीक कह रहा हो।''

''मिस, मैं इसे कल नई पेंसिल ला दूँगा।'' रवि ने थोड़ी नाराजगी दिखाते हुए कहा।

''न भी ला सके तो भी कोई बात नहीं।'' अध्यापिका ने रवि के सिर पर हाथ फेरा। ''मित्रता में बदला चुकाना जरूरी नहीं होता। मुसीबत के समय काम आना जरूरी होता है। जैसे आज मोहन ने तुम्हारी मदद की। तुम इसे धन्यवाद दो।''

''धन्यवाद मोहन!'' रवि ने अपना हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ाया।

''कोई बात नहीं रवि! मेरे पास और पेंसिल है।'' मोहन ने हाथ मिलाते हुए कहा।

''शाबाश!'' नीता ने मुसकराकर कहा। इतने में छुट्टी की घंटी बज

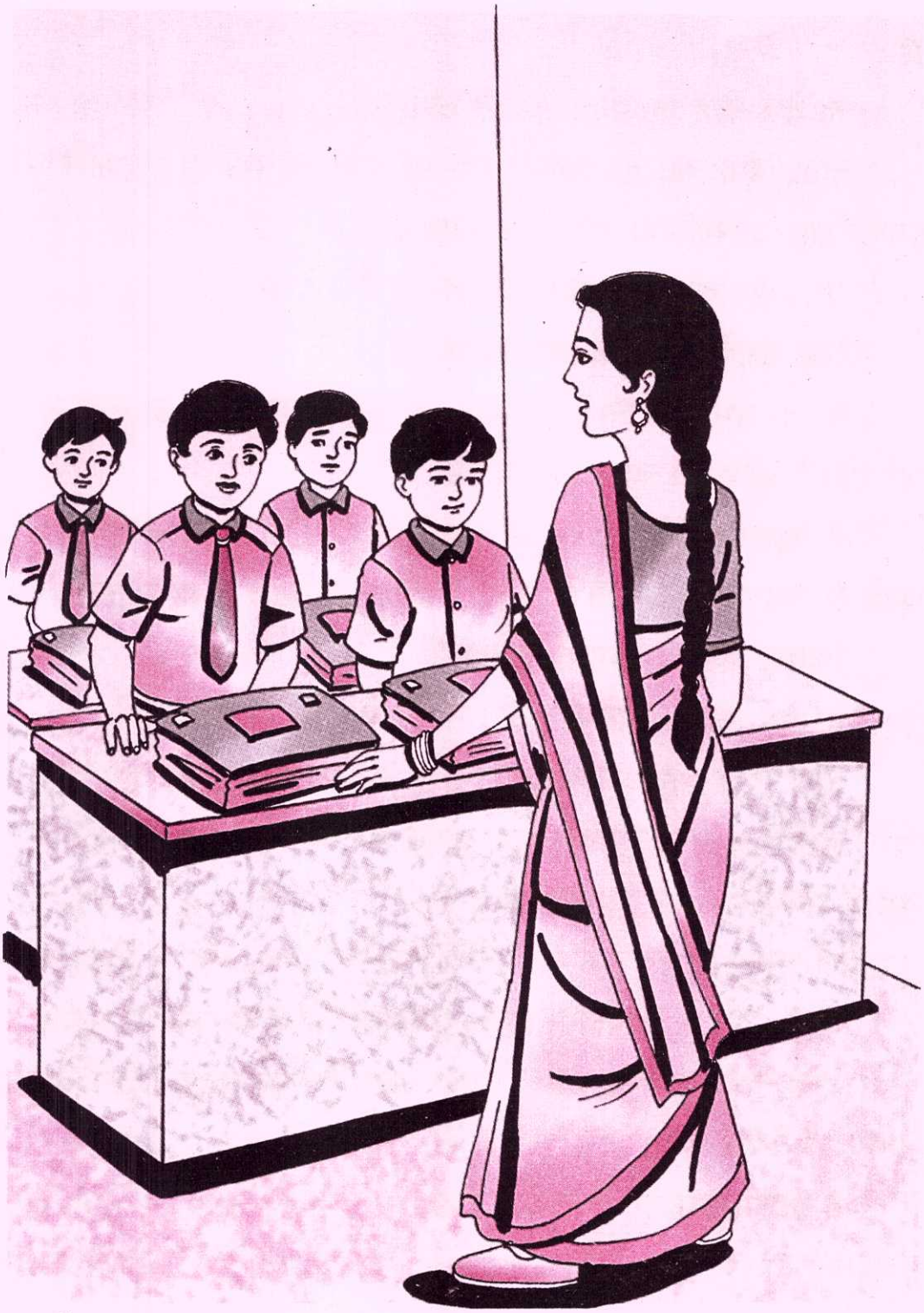

गई।

नीता तेज-तेज कदमों से चलने लगी।

"नीता, क्या बात है। भागती हुई-सी कहाँ जा रही हो?" पीछे से उसकी सह-अध्यापिका सुरेखा ने आवाज दी।

"घर, और कहाँ?" नीता ने मुड़कर पीछे देखा।

सुरेखा उसके नजदीक आ गई थी।

"घर तो सभी ने जाना है। लेकिन तुम आज कुछ ज्यादा ही खुश लग रही हो।" सुरेखा ने बात आगे बढ़ाई।

"हूँ, खुशी की तो बात है। आज घर में मेरी सीमा दीदी आ रही हैं।" खुशी से चहकते हुए नीता ने कहा, "साथ में मेरा भानजा मोहित।"

"कितना बड़ा है तुम्हारा भानजा?"

"दो वर्ष का तो होनेवाला है। मैं उसके साथ खूब खेलूँगी।"

"तुम्हें बच्चे बहुत अच्छे लगते हैं न?" सुरेखा ने हँसते हुए कहा।

"बच्चों के साथ जुड़कर ऐसा लगता है, जैसे हम स्वाभाविकता से जुड़े हैं। बनावट और दिखावे से दूर।"

दोनों स्कूल के गेट तक आ पहुँचीं। दोनों ने एक-दूसरे से विदा ली।

"दीदी!" नीता ने पलंग पर बैठी अपनी बहन को जोर से पुकारा।

"ओह नीता! तुम आ गईं।" सीमा पलंग से नीचे उतरी। दोनों बहनें आपस में लिपट गईं।

"तू इतनी कमजोर क्यों हो गई है?" सीमा ने बहन के चेहरे को छुआ।

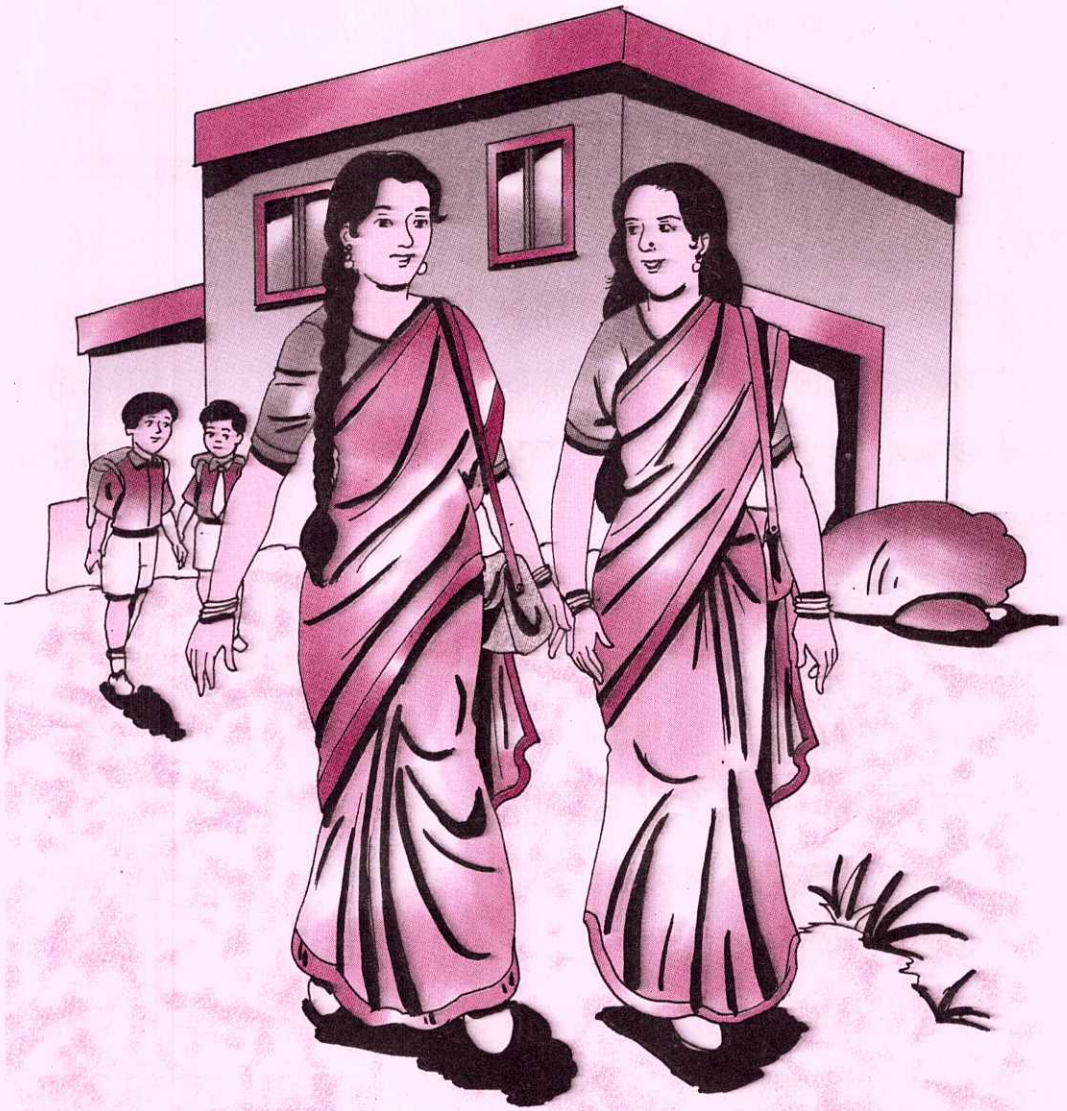

''मैं कमजोर नहीं हुई दीदी! आप पहले से ज्यादा मोटी हो गई हैं।'' नीता ने भरे-भरे बदनवाली सीमा को देखकर कहा।

''क्या सच में मोटी लग रही हूँ?'' आशंकित हो सीमा ने पूछा।

''हूँ, पहले से थोड़ी लग तो रही हो।''

''आ, बैठ यहाँ।'' सीमा ने उसे अपने पास ही पलंग पर बिठा लिया।

''दीदी, मोहित कहाँ है?'' अचानक नीता को जैसे कुछ याद आ गया।

''मोहित···उसे तो मैं साथ नहीं लाई।'' सीमा ने शोखी से कहा।

''यह क्या दीदी! फिर आप क्यों आईं?'' नीता ने मचलते हुए कहा।

''अच्छा, तू मुझसे मिलकर खुश नहीं हुई।'' सीमा ने नाराजगी दिखाई।

''नहीं, नहीं। ऐसी बात तो नहीं है। लेकिन मोहित···। क्या माँ के पास है।'' नीता उसे इधर-उधर खोजने लगी—''रुकमी के पास है।''

''यह रुकमी कौन है दीदी?''

''मोहित को उठाने-खिलाने के लिए रखी है।''

''आपका मतलब 'आया'।''

''आया ही समझ लो।''

''रुकमी? ओ रुकमी! मोहित चुप हो गया? अंदर से ले आ उसे।''

आठ-दस साल की एक बच्ची अंदर आई। उसने मोहित को उठाया हुआ था। बच्चा उसके पास उछल रहा था।

''ध्यान से उठा उसे।''

कैसे उछल रहा है। गिर जाएगा। सीमा ने बच्ची को डाँटा, "तुमने इतनी छोटी बच्ची के हाथ में बच्चा दिया ही क्यों? वह तो गिरेगा ही।" नीता ने मोहित को बच्ची से ले लिया। वह भानजे को प्यार करने लगी। बच्चा मचलने लगा। माँ की ओर लपकने लगा।

सीमा ने मोहित को थाम लिया। बोली, "रुकमी, जल्दी से जा। इसका दूध बोतल में डालकर ले आ। नहीं तो अभी रोने लगेगा।" रुकमी सिर झुकाए कमरे से बाहर निकल गई।

"और सुन," सीमा ने पीछे से आवाज लगाई, "बोतल अच्छी तरह से धो लेना। दूध ज्यादा गरम मत करना।"

नीता पहले रुकमी, फिर अपनी दीदी की ओर देखने लगी।

"यह लड़की कौन है दीदी?"

"तुम्हें अभी बताया तो है। मोहित के लिए रखी है।"

"मगर तुम तो आया कह रही थीं।"

"जो बच्चे को उठाएगी, खिलाएगी, देखेगी, उसे क्या कहेंगे? तू बता?" सीमा बच्चे को पुचकराने लगी।

"लेकिन यह तो खुद छोटी सी बच्ची है।"

"फिर क्या हुआ? घर में रखने के लिए छोटी लड़की ठीक रहती है।"

"परंतु दीदी, इसे बच्चा सँभालना आता है क्या?"

"आता क्यों नहीं। घर में अपने छोटे भाई-बहनों को नहीं सँभालती?"

"तुम्हें यह कहाँ से मिली?"

''अरे, मेरे घर में जो बाई काम करती है, यह उसकी भतीजी है।''

''तुमने कहा इसे लाने के लिए?''

''उसका भाई एक हादसे में मर गया। परिवार में कुल आठ जीव हैं। बड़ी मुश्किल से गुजारा चलता है।''

''फिर···''

''फिर मुझे तरस आ गया। मैंने कहा, मुन्ना अभी बहुत छोटा है। उसे उठाने के लिए किसी को ले आ।''

''और वह इस छोटी सी बच्ची को ले आई।''

''यह तू क्या बार-बार छोटी-छोटी की रट लगा रही है।''

''तो क्या यह छोटी नहीं है।''

''अरे, छोटी है तो क्या हुआ? उससे और कौन सा काम करवाना है। बस, जरा बच्चे को उठा-खिला लेती है।''

''दीदी, बच्चे का काम क्या इतना सा ही होता है।''

''तो, बच्चे के साथ और क्या···।''

''अगर बच्चे का काम इतना सा ही होता है तो तुमने इसे आया के तौर पर क्यों रखा?''

''यह तू क्या बहस करने लगी सीमा से?'' उन दोनों की माँ कमरे में दाखिल हुई।

''जा, कब से स्कूल से आई है, अभी तक कपड़े भी नहीं बदले। जल्दी से मुँह-हाथ धो ले। मैं खाना परोसती हूँ।'' इतने में रुकमी दूध की बोतल लेकर कमरे में आई।

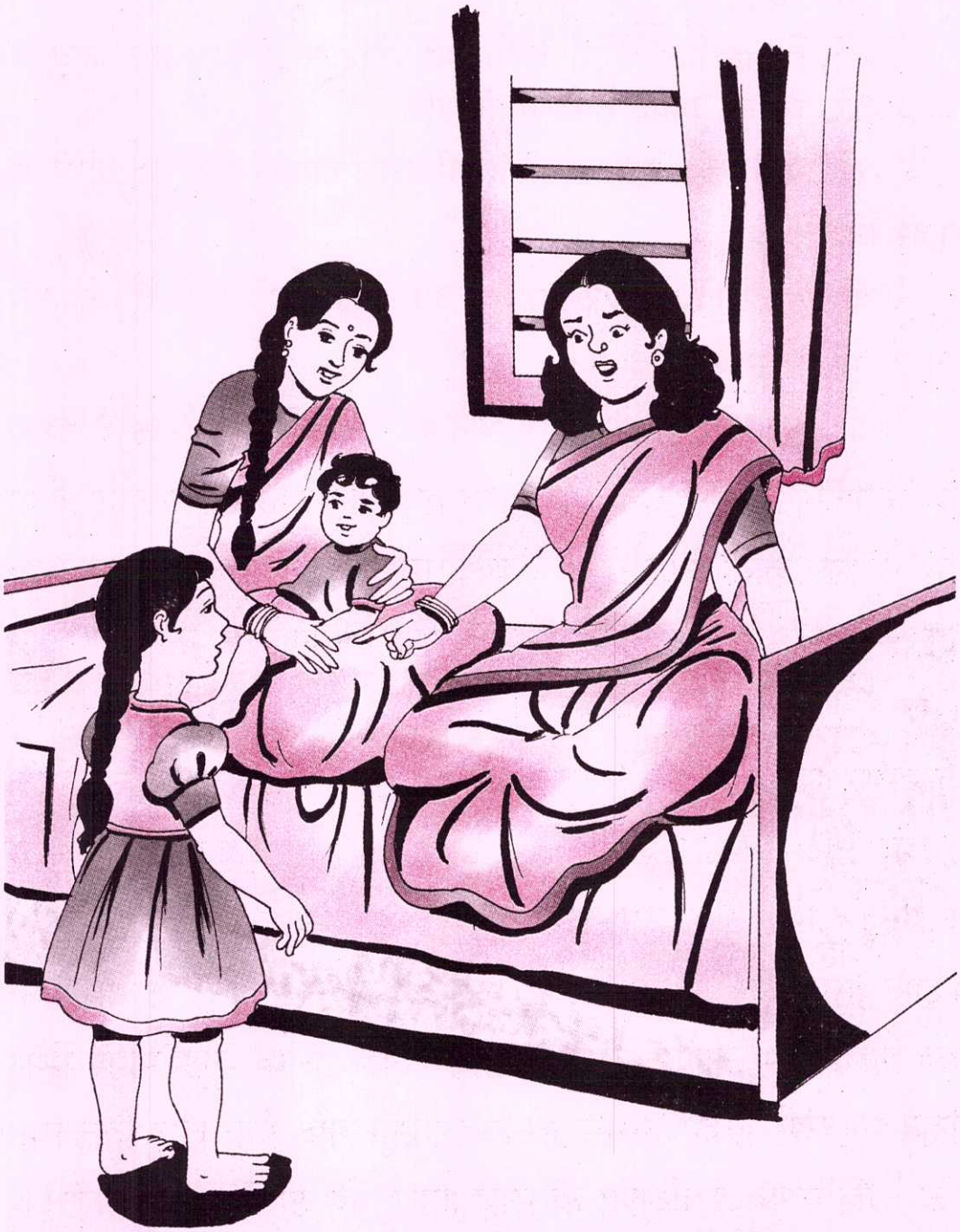

"माँ, रुकमी को साथ ले जाओ। तुम्हारा हाथ बँटा देगी।" सीमा ने माँ से कहा और बच्चे को दूध पिलाने लगी।

"यह क्या काम करेगी?" माँ ने कहा।

"अरे, बरतन आदि कमरे में ले आएगी।"

"कोई बात नहीं। मुझे आदत है। मैं खाना लगाती हूँ।" माँ कमरे से बाहर निकल आई।

"यह खाली तो खड़ी है। मोहित को सुलाकर मैं आती हूँ। रुकमी, जा तो माँ के साथ रसोई में।"

"जी, मुझे अभी उसके कपड़े धोने हैं।" रुकमी ने डरते-डरते कहा।

"कौन से कपड़े?"

"वही जो मोहित के टट्टी-पेशाब वाले पड़े हैं न।"

"हे राम! तूने अभी तक नहीं धोए। क्या कर रही थी तू इतनी देर से? यह लड़का भी बार-बार गीला कर देता है। जा, जल्दी से उन्हें धोकर डाल दे, ताकि सूख जाएँ।" सीमा ने खीजते हुए कहा, "जरा अच्छे से साफ करना। पानी निचोड़कर रस्सी पर डालना।"

रुकमी तेजी से बाहर निकल गई।

□

"अरे, यह रुकमी कहाँ गई?" माँ ने पुकारा।

"तुम किस काम के लिए उसे बुला रही हो माँ?" नीता ने रसोई में कदम रखा।

"काम नहीं रे! मैं तो चाह रही थी, वह लड़की खाना खा ले।"

वे तीनों कमरे में खाना खाने लगीं।

"रुकमी कहाँ है दीदी?" नीता ने खाना खाते हुए पूछा।

"वह कपड़े धो रही है। अभी आ जाएगी।" सीमा ने लापरवाही से कहा।

"कपड़े···तुम उससे कपड़े भी धुलवाती हो दीदी?"

"भई, मोहित की दो-चार निक्करें गंदी पड़ी थीं। बस, वही धोने गई है।"

"हे भगवान्!" नीता खाना खाकर उठ खड़ी हुई। वह कमरे से बाहर निकल गई।

"अब तू कहाँ चली नीता?" माँ ने पीछे से आवाज लगाई।

□

रुकमी पिछवाड़े के आँगन में थी। वह छोटे-छोटे हाथों से मोहित के कपड़े धो रही थी।

"सुन, मैं ये कपड़े सूखने के लिए डाल देती हूँ। तू जाकर खाना खा ले।"

"मैं कर देती हूँ बीबीजी।" हौले-हौले रुकमी ने कहा।

"नहीं तू जा।"

"रुकमी, ऐ रुकमी···!"

"जी आ···ई···"

"मुन्ने को उठाकर बाहर ले जा। बहुत तंग कर रहा है।" रोते बच्चे को सीमा ने रुकमी को पकड़ाया। पर बच्चा उसके पास जाने को तैयार

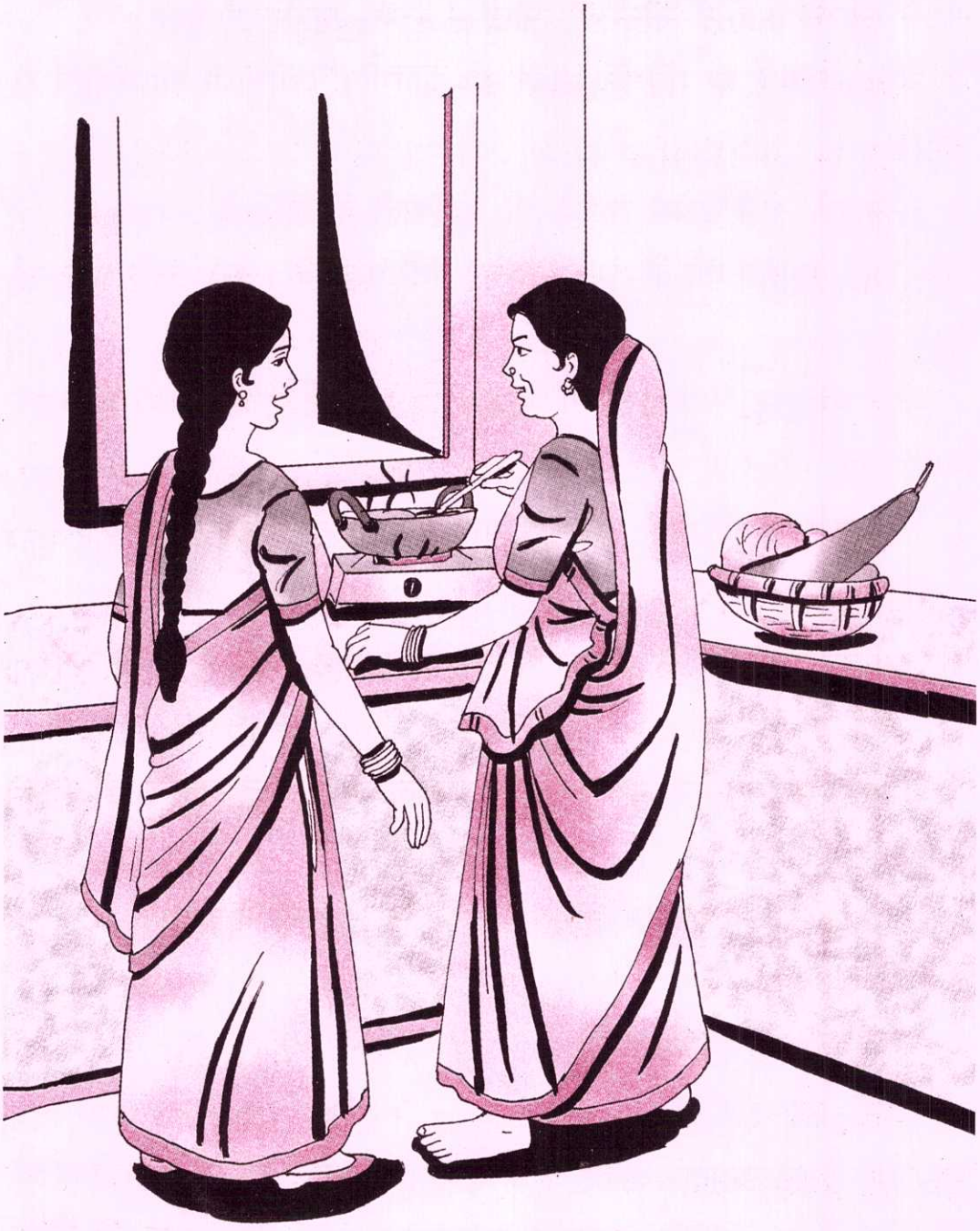

नहीं था।

''ले जा न इसे बाहर। अभी तक यहीं खड़ी है।''

''वह आ नहीं रहा बीबीजी।''

''तू ले जा इसे। खिलौने भी रख ले।''

मोहित को जबरदस्ती रुकमी के साथ बाहर भेज दिया। रुकमी उसे बाहर बरामदे में ले आई। उसके हाथ में दो-तीन खिलौने भी थे। मोहित कुछ देर तक झुँझलाता रहा। फिर खिलौनों में मस्त हो गया। रुकमी भी खिलौने वाली कार से खेलने लगी।

''तू क्या कर रही है?'' सीमा ने रुकमी के पास आकर तेजी से पूछा।

''वो···वो···मैं, मोहित को खिला रही थी।'' रुकमी ने सहमकर कहा।

''तू तो खुद खेल रही है। वह तो अपने आप खेल रहा है न! जा तू, वह सूखे कपड़ों को तह करके रख दे। मैं इसे देखती हूँ।''

''ओए···ओए··· मेरा राजा बेटा!'' नीता भी आकर मोहित से खेलने लगी।

''कैसा गुड्डा सा है न, दीदी।'' नीता उसे उठाने लगी।

''छि···छि···दीदी! इसने तो गीला किया हुआ है।''

''अच्छा है, जरा मौसी के कपड़े भी भिगा दे।'' सीमा हँस दी।

''रुकमी···ओ रुकमी! जरा पोंछा तो ले आ। सारा फर्श गंदा कर दिया इसने।'' सीमा ने जोर से आवाज लगाई।

रुकमी भागती हुई अंदर आई।

''क्या कर रही थी, इतनी देर लगा दी?''

''कपड़े···तह···रही।'' रुकमी अटक-अटककर बताने लगी।

''अच्छा, अच्छा! वह सब बाद में करना। पहले पोंछा लगा दे। फिर इसकी एक निक्कर ले आ।'' रुकमी पोंछा लेने चल दी।

''अरे, सुन तो! यह गीली निक्कर साथ ही ले जा। इसे भी पानी से निकालकर सूखने के लिए डाल दे।'' रुकमी जल्दी से साफ निक्कर ले आई।

''ऐसा कर, इसके लिए सूजी की खीर बना ला। इसका टाइम हो रहा है। नहीं तो रोने लगेगा।''

''अच्छा जी!''

''इसे सूजी की खीर बनानी आती है क्या?'' नीता ने हैरानी से पूछा।

''हाँ, मैंने इसे सिखा दिया है।''

''फिर भी दीदी?''

''क्या फिर भी! उसमें करना ही क्या है? मैंने सूजी भूनकर रखी हुई है। पैन में उसे डाल दूध-चीनी ही तो मिलानी है।''

''इतनी छोटी बच्ची, गैस के पास···।''

''यह क्या है नीता? जब से मैं आई हूँ, तुम छोटी बच्ची, छोटी बच्ची कर रही हो।''

''तुम उस बच्ची से कितना काम लेती हो दीदी।''

''मैंने उसे मोहित के लिए ही तो रखा है। थोड़ा उसे सँभाल ले और क्या?''

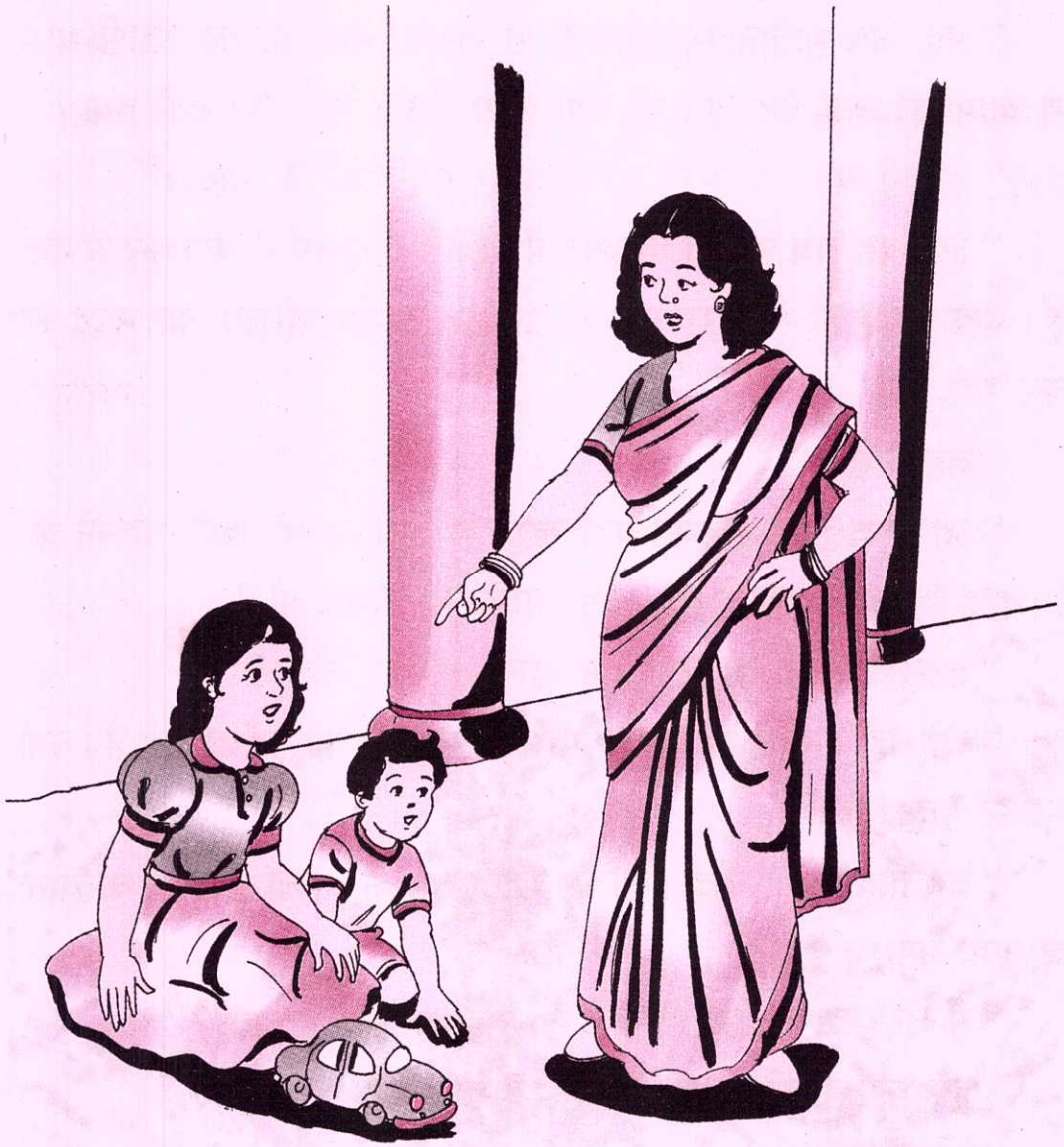

''लेकिन तुम तो उससे और भी बहुत सारे काम लेती हो, दीदी।''

रसोई में रुकमी सूजी की खीर बना रही थी। गरम पैन उठाते हुए उसका हाथ जल गया।

कमरे में दोनों बहनें अभी भी बातें कर रही थीं।

''भई, जब मोहित सो जाता है या खेलता होता है, तब उससे थोड़े से काम को कह देती हूँ। सो क्या हुआ? उसे पैसे नहीं देती क्या?''

''उसकी यह उम्र स्वयं खेलने और पढ़ने की है, दीदी।''

''अब यह सब उसकी किस्मत में नहीं है तो इसमें मैं क्या कर सकती हूँ। देखा जाए तो मैं एक तरह से उसकी, उसके परिवार की मदद ही कर रही हूँ।''

''वह कैसे?''

''लो भला। यह लड़की यहाँ रहती है। इसे अच्छा खाने-पहनने को मिलता है। अपने घर में तो भूखों मरने की नौबत थी।''

''तनख्वाह देती हो या सिर्फ खाना-कपड़ा, दीदी?''

''अरे नहीं। तनख्वाह इसकी मौसी इसकी माँ को पहुँचा देती है। क्यों हुई न मदद!''

''वह तो ठीक है दीदी। लेकिन छोटी उम्र के बच्चों से काम करवाना कानूनी अपराध है।''

''मैं उसे खाना-पैसा दे रही हूँ। यह अपराध है क्या?''

''हाँ, कानून की नजर में यह अपराध है।''

''यह कैसा कानून है भला?''

''चौदह वर्ष से कम आयु के बच्चों से हम कारखानों, दुकानों, घरों में काम नहीं ले सकते, दीदी।''

''घरों में भी नहीं।''

''नहीं, घरेलू कामों में भी नहीं।''

''क्यों?''

''क्योंकि सभी बच्चों को खेलने और पढ़ने का अधिकार है। उनका बचपन हमें नहीं छीनना चाहिए।''

''लेकिन गाँवों में तो इनके माँ-बाप इनसे काम लेने लगते हैं, तो पुलिस उन्हें क्यों कुछ नहीं कहती? कानून इनके माँ-बाप को सजा क्यों नहीं देता?''

''दीदी, कानून तो बहुत कुछ कहता है। परंतु हमारे देश में कोई सुने तब न!''

''सरकार बच्चे कम पैदा करने के लिए कहती है।''

''लेकिन उसका इस बात से क्या लेना-देना हुआ?''

''छोटा परिवार होगा। एक-दो बच्चे होंगे। उन्हें आसानी से पढ़ाया-लिखाया जा सकता है। फिर बालश्रम की नौबत नहीं आएगी।''

''वो कैसे?''

''अब रुकमी के घर में आठ जीव हैं। यदि एक-दो बच्चे होते तो क्या इसकी माँ आसानी से इन्हें पाल नहीं सकती थी!''

''हाँ, यह तो तुम ठीक कह रही हो।''

''सरकार बड़े परिवार को रोकना चाहती है, दीदी।''

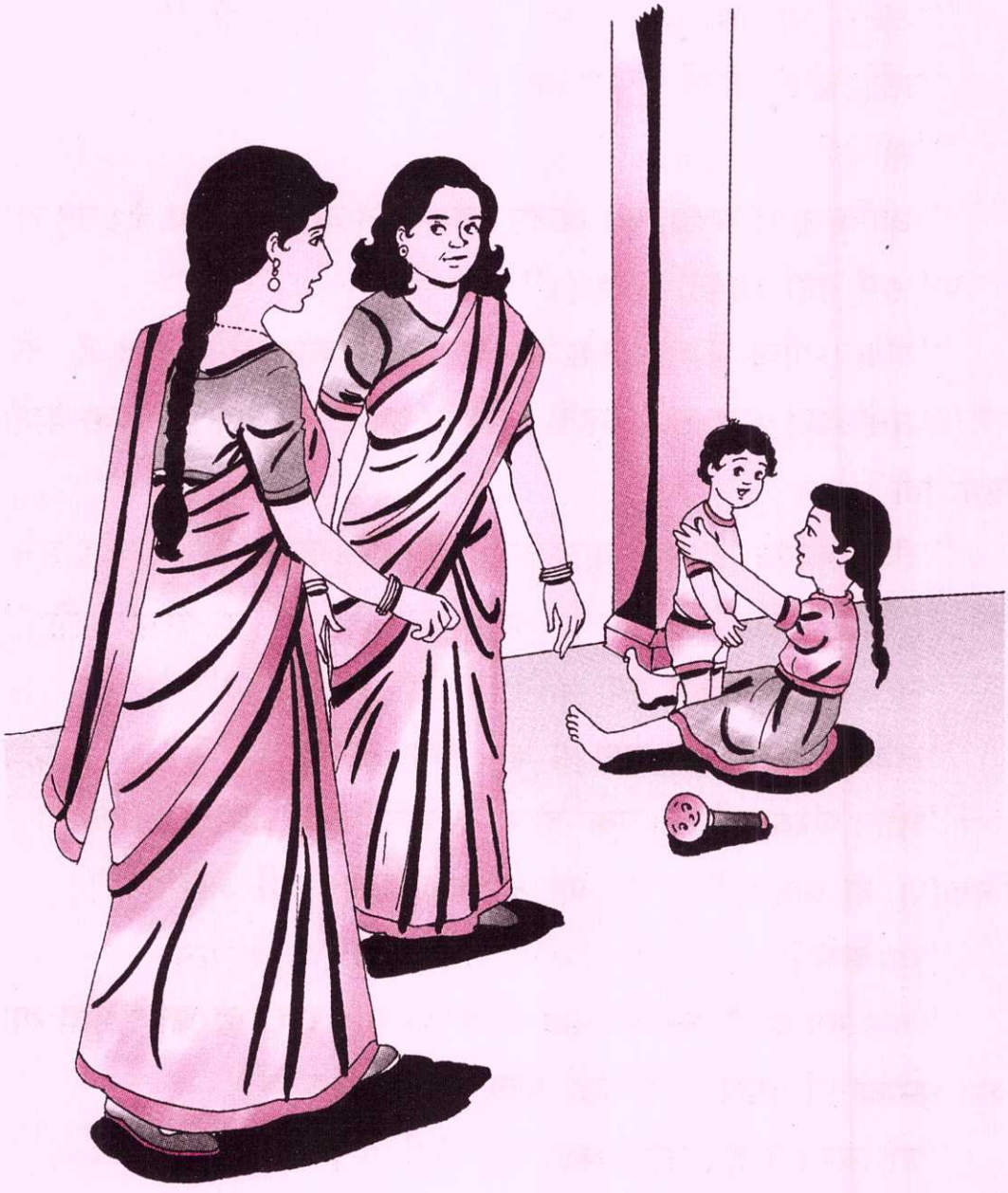

"तूने पते की बात की है। मगर मैं तो इसकी मदद कर रही हूँ, नीता।"

"दीदी, आप सचमुच इसकी मदद करना चाहती हैं।"

"हाँ।"

"तो मेरी एक बात सुनिए।"

"बोल, क्या कहना चाहती है? इस लड़की को वापस भेज दूँ?"

"नहीं, इसे वापस न भेजो।"

"फिर क्या करूँ?"

"तुम अपने पास रखकर इसे पढ़ा-लिखा दो। कम-से-कम माध्यमिक तक की पढ़ाई जरूर करवाओ।"

"फिर मोहित··· ?"

"जब तक वह स्कूल में पढ़े तब तक मोहित को खुद सँभाल लो।"

"मगर स्कूल का खर्चा···।"

"इसे किसी सरकारी स्कूल में दाखिल करवा दो। वहाँ फीस कम लगेगी।"

"हाँ, यह तो है।"

"फिर भगवान् का दिया सभी कुछ तो है तुम्हारे पास।"

"भगवान् की दुआ है।" सीमा ने अनजाने ही हाथ जोड़ परमात्मा का धन्यवाद किया।

"गरीब की बेटी पढ़ जाएगी। तुम्हें पुण्य मिलेगा।"

"फिर तनख्वाह न दूँ।"

''दीदी, अगर यह प्यार से मोहित को सँभालेगी, तुम्हारा हाथ बँटाएगी तो तनख्वाह समझकर न सही, मदद के तौर पर कुछ इकट्ठे रुपए भेज दिया करना।''

''चलो, रुपए इसके परिवार के काम आएँगे।''

''और यह तुम्हारे काम आएगी दीदी। एक पंथ दो काज।''

''यह क्या समझा रही है तू बड़ी बहन को?'' माँ हँसती हुई कमरे में दाखिल हुई।

''मैं तो यह कह रही थी माँ कि रुकमी मोहित का खयाल रखती है। तुम इसका खयाल रखो।''

''वह कैसे भई?'' माँ ने पूछा।

''यदि दीदी रुकमी को पढ़ा-लिखा दें तो उसका भविष्य सुधर जाएगा। ठीक कह रही हूँ माँ?''

''बिलकुल ठीक।'' जवाब दिया नीता के बाबूजी ने, जो अभी-अभी दफ्तर से लौटे थे।

''सबकी नीता जैसी बेटी हो, जो इतनी समझदार है।'' उन्होंने नीता और सीमा के सिर पर हाथ फेरा।

''बाबूजी!'' नीता उनसे लिपट गई।

''ठीक ही तो है। इस तरह किसी का भला हो जाएगा।'' नीता ने कहा।

''हाँ-हाँ।'' तीनों ने हामी में सिर हिलाया।

''हमारे अड़ोस-पड़ोस में कोई बच्चा बालश्रम करता हो, तो उसका

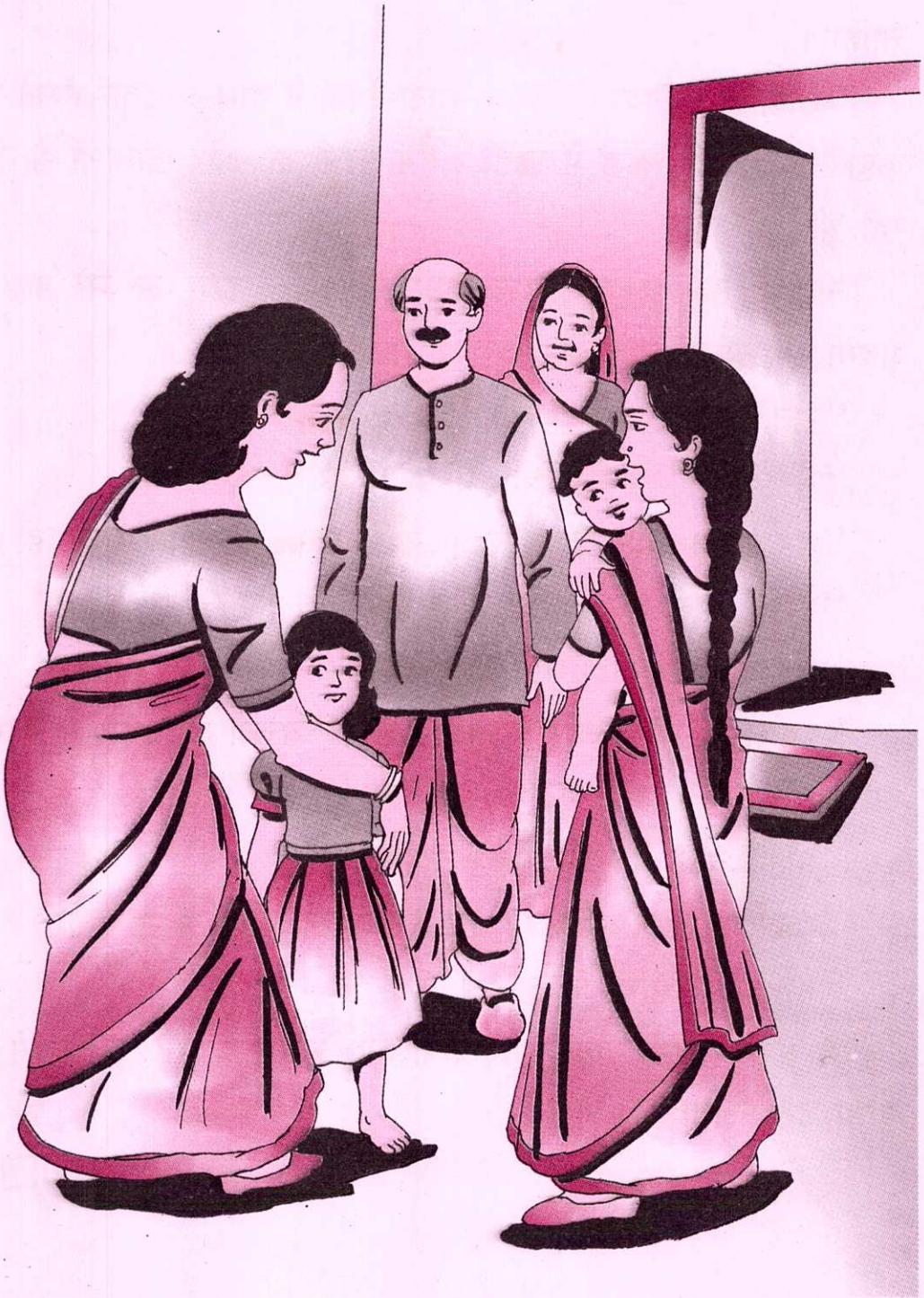

शोषण नहीं करना चाहिए, बल्कि पढ़ा-लिखाकर उसकी मदद करनी चाहिए।''

''ठीक है बहनजी।'' उसके माता-पिता ने हाथ जोड़कर हँसते हुए कहा। कमरे के नुक्कड़ में खड़ी रुकमी सभी की ओर खामोशी से ताक रही थी।

नीता ने उसे इशारे से अपने पास बुलाया, ''इधर आ मेरे पास!'' सहमी सी रुकमी नीता के पास आ गई।

''सुन, स्कूल पढ़ने जाएगी।'' नीता ने उससे पूछा।

''मैं···कैसे?'' रुकमी की आँखों में हैरानी उभर आई।

''यह सीमा आंटी हैं, बीबीजी नहीं। तुम इनके पास रहती हो।''

''हाँ।'' बिना बोले उसने हाँ में सिर हिलाया।

''यह तुम्हें स्कूल भेजेंगी। जाओगी?''

''स्कूल···। बस्ता और किताबें लेकर।'' बच्ची की आँखों में चमक आ गई।

''हाँ।'' नीता ने खुश होकर कहा।

''बालों में रिबन बाँधकर···।'' रुकमी की आँखों में सपने तैरने लगे।

''हाँ-हाँ!'' सीमा ने कहा।

वे सपने, जिन्हें नीता ने दिखाया और सीमा ने उन्हें पूरा करने का बीड़ा उठा लिया था।

□□□

आमुख

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली ने नवसाक्षरों की आवश्यकताओं, अभिरुचियों और अपेक्षाओं के अनुरूप साक्षरता-साहित्य के निर्माण में नवाचार की पहल की है। हिंदीभाषी क्षेत्रों के नवसाक्षरों की पहचान की रोशनी में प्रौढ़ साक्षरता में लेखनरत साहित्यकारों, समाजार्थिक-चिंतकों, प्रौढ़ शिक्षा विशेषज्ञों तथा सतत शिक्षा केंद्रों के अनुभवी आयोजकों ने 23-24 अगस्त, 2007 की अवधि में भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ में आयोजित विचार गोष्ठी में नवसाक्षरों के लिए उपयोगी साहित्य-लेखन पर गहन विचार-विमर्श किया।

साक्षरता-सामग्री के पाठ्य विवरण पर संगोष्ठी में सम्मिलित विषय विशेषज्ञों में सहमति हुई। साक्षरता सामग्री के तीन प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए। पहला उद्देश्य, जो नवसाक्षरों की साक्षरता को सजीव बनाने और आगे बढ़ाने में सहायक हो; दूसरा उद्देश्य, जो जन-कल्याण और सामूहिक कार्य-संस्कृति को बढ़ावा देनेवाला हो, ताकि सब लोग मिल-जुलकर रहते हुए विकास की ओर बढ़ें। तीसरा उद्देश्य, जो अपने अधिकारों और कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक हित के लिए उन्हें प्रेरणा दे सके, जिससे उनका कल्याण, समाज का हित और राष्ट्र का विकास होता रहे।

इस प्रौढ़ साक्षरता साहित्य कार्यशाला में डॉ. जसविंदर कौर बिंद्रा द्वारा लिखित पुस्तक '**एक पंथ दो काज**' नवसाक्षरों को जागरूक पाठक बनाने और विकास के क्षेत्र में उन्हें आगे बढ़ाने के अवसर प्रदान करेगी। इसका संप्रेषण और भाषा स्तर भी प्रौढ़ नवसाक्षरों में जाँच लिया गया है। इस पुस्तक का विधिवत् क्षेत्र-परीक्षण करा लिया गया है। इस पुस्तक में नवसाक्षरों के सामाजिक सरोकारों को प्राथमिकता दी गई है। हमारा विश्वास है कि यह पुस्तक निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति में अवश्य सफल होगी।

इसे प्रकाशित करने में और इसे नवसाक्षरों तक पहुँचाने में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ने जो सहयोग प्रदान किया है, हम उसके लिए हृदय से आभारी हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि प्रभात प्रकाशन ने इस शृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन एवं वितरण का दायित्व स्वीकार किया है। इस पुस्तक के पाठकों से हमें जो सुझाव प्राप्त होंगे, हम उनका स्वागत करेंगे।

17-बी, इंद्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002

—डॉ. मदन सिंह
महासचिव, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001 : 2000 प्रकाशक